कुल पृष्ठ संख्या -32 (कवर पेज सहित) क्रम संख्या..............................

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures) | | | | | | | |

(In Words) ....

....

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में ....

....

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी [ ] अंग्रेजी [✓]

विषय .... हिन्दी अनिवार्य ....

परीक्षा का दिन ....

दिनांक ....

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालन अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांको की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंको का कुल योग (Round off)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर .... संकेतांक | | | | |

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तक के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग मे लिया गया है। 163 / 2018

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाइन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं है तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध है।
   (iv) अस्त्र, स्केल, ज्यामेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिए, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठ पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जावे।

खंड 'क'

अपठित गद्यांश-

(1.) (क) समस्त समाज के कल्याण के लिये मनुष्य को सर्वप्रथम अपने परिवार में शांति, सद्‌भावना तथा परस्पर प्रेम का भाव जगाना आवश्यक होता हैं क्योंकि परिवार समाज की प्रथम व अभिन्न इकाई होता हैं। यदि परिवार में सुख, समृद्धि होगी तो ही समाज विकास कर पायेगा।

(1.) (ख) किसी भी देश को प्रशंसनीय बनाने में, उस देश के निवासियों के मन में देश के प्रति गर्व की भावना, देश के प्रति स्वाभिमा शांतिपूर्ण सहअस्तित्व तथा परस्पर बंधुत्व की भावना आदि ं का महत्वपूर्ण योगदान होता हैं क्योंकि ऐसा देश संदेह सामाजिक व राजनीतिक तथा आर्थिक रूप से समृद्ध T हैं।

BSER-164/2018

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

अपठित पद्यांश →

(2.) (अ.) कवि के अनुसार, किसी भी कार्य को करने से पूर्व हमें उस कार्य से होने वाले लाभ-हानि तथा ऊँच-नीच आदि का विश्लेषण अपनी तर्क-बुद्धि से कर लेना चाहिए जिससे सभी का हित हो सके। ऐसा करने से वह कार्य जरूर सफल होगा।

(ब.) संपूर्ण देश के सुधार के लिये हमें विभिन्न उपायों पर विचार करना चाहिए। सदा परोपकारी प्रवृति रखनी चाहिए। भाईचारे की भावना रखकर जाति-पाँति, ऊँच-नीच की भावना को त्याग देना चाहिए तथा समस्त देशवासियों के प्रति अपने मन में प्रेम-समर्पण की भावना रखनी चाहिए तथा, कोई भी ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए जो देश-हित के मार्ग में बाधक हो।

शिक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

खंड 'ब'

प्रश्न क्रमांक (3.) का उत्तर

(अ.) खड़ी बोली हिन्दी ने अपने शब्द-भंडार का विकास विभिन्न प्रकार की भाषाओं तथा उपभाषाओं की सहायता से किया हैं। ~~प्राकृत, अपभ्रंश~~ संस्कृत, पालि, प्राकृत व अपभ्रंश के क्रम से यह भाषा विकसित हुई हैं। इसमें अंग्रेजी से गृहीत स्वर (ऑ), फारसी से गृहीत ध्वनियाँ (क़, ख़ आदि) भी शामिल की गई हैं। ब्राह्मी लिपि से ही हिन्दी भाषा की लिपि देवनागरी का भी विकास हुआ हैं। इस तरह इस भाषा ने अपने शब्द-भंडार का विकास किया हैं।

(ब.) व्याकरण वह शास्त्र हैं जिसके द्वारा किसी भी भाषा को शुद्ध रूप से बोलने व उसे शुद्ध लिपि के द्वारा शुद्ध रूप में लिखने के नियमों की जानकारी दी जाती हैं। हिन्दी व्याकरण शास्त्र में भी इन नियमों की जानकारी दी जाती हैं। हिन्दी भाषा के वर्ण, शब्द, शब्दांश, पद, पदांश, वाक्य, वाक्यांश आदि बातों की जानकारी व्याकरण के विभिन्न विभागों के द्वारा दी जाती हैं। हिन्दी व्याकरण शास्त्र अपने आप में काफी समृद्ध हैं।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

प्रश्न क्रमांक (4.) का उत्तर

(अ.) चीन 'साम्राज्य विस्तार नीति' पर कार्य करता है।

चीन- संज्ञा, व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्त्ताकारक, 'करता है' क्रिया का कर्ता।

(ब.) रजनी समय से पहले आ गई।

से पहले- क्रियाविशेषण, कालवाचक क्रियाविशेषण, 'से' के साथ 'आ गई' क्रिया की विशेषता बतलाता है।

प्रश्न क्रमांक (5.) का उत्तर

उपर्युक्त वाक्य में अभिधा शब्द-शक्ति है।

परिभाषा-
जिस शब्द की जिस शक्ति के द्वारा उसके सर्वाधिक प्रचलित, साधारण अर्थ को ग्रहण किया जा सके तो उस अर्थ को 'मुख्यार्थ' (मुख्य अर्थ) कहते हैं तथा उस अभिधेयार्थ या मुख्यार्थ को प्रकट करने

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

वाली शब्द - शक्ति अभिधा शब्द-शक्ति कहलाती है। इस वाक्य में शब्द के सह्य - अर्थ को ग्रहण करने पर वाक्य को मूल अर्थ बिना किसी बाधा के ग्रहण हो रहा है। अतः इसमें अभिधा शब्द - शक्ति है।

प्रश्न क्रमांक (6.) का उत्तर

उपर्युक्त दोहे में 'श्लेष अलंकार' है।

श्लेष अलंकार - (लक्षण:)

जब काव्य में एक या अधिक शब्द या शब्दों के संदर्भ अलग - अलग संदर्भों में अलग - 2 अर्थ निकलते हैं तो वहाँ श्लेष अलंकार होता है।

इस दोहे में तरयौना का एक अर्थ कान का आभूषण तथा दूसरे को तरयौं न ना होने से 'संसार से मोक्ष प्राप्त न होना' लिया जायेगा। श्रुति के भी दो अर्थ होंगे- ~~का~~ कान तथा दूसरा 'कान भरना'। नाक के - 'नाक' तथा 'स्वर्ग' दो अर्थ हैं। मुकतन के- 'मोती' व ~~तपस~~ 'मुक्त तपस्वी' दो अर्थ हैं जो विभिन्न संदर्भों के लिये अलग -2 अर्थ के द्योतक हैं।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्रश्न क्रमांक (7) का उत्तर

(अ) Schedule → कार्ययोजना

(ब) Project → परियोजना

BSER-164/2018

...क द्वारा ... अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(8.) रविकुमार
शासन सचिव

कार्यालय-शिक्षा विभाग
जयपुर
अ.शा.प.क्र.-शास/शिनि/2017-18/191
दिनांक- 10 मार्च, 2018

प्रिय श्री परमार जी,

कृपया मेरे द्वारा पूर्व मे भेजे गये अर्द्धशासकीय पत्र क्रं.- शास/शिनि/जय/2017-18/190 पर विचार कीजिए जिसमें मेरे द्वारा आपको राज्य के समस्त संस्था-प्रधानों को 'गुणवत्तापूर्ण शिक्षा' की सुनिश्चितता हेतु आदेश देने के लिये स्मरण दिलाया गया था। इस नवीन सत्र से राज्य के अधीन संचालित समस्त राजकीय विद्यालयों में शिक्षा की गुणवत्ता सुनिश्चित करने हेतु विद्यालयों में पर्याप्त स्टाफ की व्यवस्था, समय-समय पर शैक्षणिक मेलों तथा परीक्षाओं का आयोजन शिविरा के अनुसार निश्चित ही किये जाने चाहिए ताकि विद्यार्थियों के भावी परीक्षा-परिणाम में सुधार हो तथा हमारा राज्य शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़े।

अतः आप शीघ्रातिशीघ्र राज्य के राजकीय विद्यालयों के संस्था-प्रधानों को इस हेतु उचित आदेश देवें।

सादर धन्यवाद!

भवन्निष्ठ
हस्ताक्षर
(रविकुमार)
शासन सचिव
शिक्षा विभाग

सेवा में,
श्री क ख ग परमार
मुख्य शासन सचिव,
शिक्षा मंत्रालय, राजस्थान

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्रश्न क्रमांक (9.) का उत्तर (अ)

निबंध - "बालिका शिक्षा"

संकेत - बिन्दु -

(1.) प्रस्तावना (2.) बालिका शिक्षा का महत्व (3.) बालिका शिक्षा की वर्तमान स्थिति (4.) उपसंहार।

(1.) प्रस्तावना -

समाज में किसी भी मनुष्य को कुशलता पूर्वक जीवन संचालित करने हेतु शिक्षा की आवश्यकता होती हैं। शिक्षा प्राप्त अर्थात् शिक्षित व्यक्ति ही समाज को प्रगति के रास्ते पर ले जायेगा। समाज की उन्नति से राष्ट्र की उन्नति होगी। राष्ट्र की उन्नति से राष्ट्रीय आत्मनिर्भरता में बढ़ोतरी संभव हैं। नारी या स्त्री समाज का या राष्ट्र का 50 प्रतिशत हिस्सा हैं। यदि वह ही शिक्षा से वंचित रहेगा तो ऐसी स्थिति कभी भी संपूर्ण समाज तथा राष्ट्र के लिये कल्याण कारी न होगी।

आज मनुष्य विकास के पथ पर आगे बढ़ रहा हैं परंतु तथाकथित सभ्यता व संस्कृति के विकास से स्थिति और सुधरने के बजाय बिगड़ रही हैं। आज बालिकाओं को या तो शिक्षा के अवसर दिये नहीं जाते हैं या फिर उन्हें केवल प्रारंभिक शिक्षा देकर

द्वारा अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

केवल घर के कामों तक ही सीमित कर दिया जाता है। स्त्री केवल घर की चारदीवारी में ही कैद होकर रह जाती है।

(2) (2.) बालिका शिक्षा का महत्व- "पढ़ी लिखी बेटी, रोशनी है घर की"। कथन पूर्णतः सत्य है।
डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने कहा है कि "यदि आप एक बेटे को शिक्षित करोगे तो केवल वही शिक्षित होगा, परंतु यदि आप एक बेटी को शिक्षित करोगे तो पूरा परिवार शिक्षित होगा।"
यदि समाज का, राष्ट्र का 50% हिस्सा अशिक्षित है तो न केवल इससे राष्ट्र की प्रगति रुकेगी वरन् समाज भी शिक्षित व उन्नत नहीं हो पायेगा। बालक को शिक्षा व संस्कृति का पाठ सर्वप्रथम माँ के द्वारा ही पढ़ाया जाता है। यदि वह शिक्षित होगी तो बालक का समाजीकरण (socialization) सही तरीके से होगा। ऐसी प्रवृति संपूर्ण समाज की प्रगति करेगी।

(3.) बालिका शिक्षा की वर्तमान स्थिति- वर्तमान में RTE (Right to education) के सफल क्रियान्वयन से 6से14

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

वर्ष समूह के बालकों व बालिकाओं को निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा का अधिकार दिया जा रहा है। परंतु इसके तहत केवल प्राथमिक शिक्षा देने का ही प्रावधान किया गया है।
आज महिलाओं व बालिकाओं की साक्षरता का प्रतिशत तो नित्य-प्रति बढ़ रहा है परंतु राजनीतिक, सामाजिक व आर्थिक जीवन के विभिन्न आयामों में महिलाओं की भागीदारी पुरुषों के समकक्ष नहीं है। आज महिलाएँ उच्च पदों पर कार्य कर रही हैं परंतु उनका प्रतिशत बहुत कम है। महिलाओं में अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता नहीं है। वे समाज के डर से चुप्पी ग्रहण कर लेती हैं। परंतु ये स्थिति वर्तमान में हितकर नहीं है। इससे महिलायें प्रगति के पथ पर पुरुषों से पिछड़ जायेगी।

(4.) उपसंहार- भारत में नारी-शिक्षा (बालिका-शिक्षा) की स्थिति हालांकि संतुष्टिजनक स्तर तक नहीं पहुँची है परंतु इस हेतु प्रयास जारी है। परंतु राजकीय प्रयास ही पर्याप्त नहीं हैं। बल्कि नारियों व बालिकाओं में भी अपने अधिकारों के प्रति जागृति होना अनिवार्य है। इस संदर्भ में जयशंकर प्रसाद की ये पंक्तियाँ उचित हैं:-

"नारी! तुम केवल श्रद्धा हो।
विश्वास रजत नग पग तल में।
पीयूष स्रोत सी बहा करो।
जीवन के सुंदर समतल में।"

द्वारा अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

खंड 'ग'

प्रश्न क्रमांक (10.) का उत्तर (ख.)

~~बच्ची~~ पुलक रहे थे ______________ नवजीवन आया ॥

(i.) संदर्भ तथा प्रसंग – प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक "सृजन" के पद्य खंड में संकलित 'मेरा नया बचपन' कविता से लिया गया हैं जिसकी रचयिता कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान हैं।
इस पद्यांश में सुभद्रा जी ने अपनी बेटी के साथ स्वयं के भी बच्ची बन जाने का स्वाभाविक वर्णन किया हैं। यथा-

(ii.) व्याख्या – कवियित्री सुभद्रा जी कहती हैं कि उनकी बेटी के द्वारा एक दिन उनके साथ खेलने पर, ~~उसमें~~ उन्हें ऐसा लगा कि उनका खोया हुआ बचपन वापस लौट आया हो। एक दिन जब कवयित्री अपने बचपन का मधुर स्मरण कर रही थी तब उनकी छोटी-सी बिटिया अचानक उनके पास आई। उस समय उसके अंग खुशी तथा आनंद-भाव से पुलकित अर्थात् प्रसन्न व सक्रिय हो ~~स~~ गये थे। उसकी आँखों में एक अद्भुत कौतूहल या हँसी का-सा भाव झलक रहा था क्योंकि वह मिट्टी खाकर आयी थी तथा इस पर वह अब कवयित्री की प्रतिक्रिया देखने

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

की इच्छुक थी। उसके चेहरे पर एक अजीब-सी बाल-सुलभ लालिमा थी तथा वह एक ऐसे गर्व से परिपूर्ण थी, मानों उसने किसी चीज पर विजय या फतेह हासिल कर ली हो।
जब कवयित्री ने उससे पूछा कि बेटा! तुम यह क्या उठाकर लायी हो? तो उसके द्वारा बड़े ही स्वाभाविक भाव से उत्तर दिया गया कि माँ! तुम भी खाओं। वह अपनी मुट्ठी में मिट्टी लेकर आयी थी तथा उसे कवयित्री को भी खिलाना चाहती थी। उसे इस प्रकार की बाल-सुलभ क्रीड़ा करते देख कवयित्री का हृदय प्रसन्नता व अपार आनंद से भर उठा व वह कहने लगी कि नहीं, बेटी, तुम ही इसे खाओं।
कवयित्री आगे कहती हैं कि मैंने जब अपनी बेटी को इस प्रकार की क्रीड़ा करते देखा तो मेरा हृदय प्रसन्नता से भर उठा तथा ~~उसे~~ कवयित्री को लगने लगा कि उसका खोया हुआ बचपन उसे वापस मिल गया हो। उसके द्वारा अपनी बेटी की ऐसी मनोहर रूप-आकृति को देखकर मानों उसमें एक नये जीवन का संचार हो गया हो।

(iii.) विशेष-
(i.) बच्चों की खेल की मनोहारी गतिविधियों का स्वाभाविक व रोचक चित्रण किया गया है।
(ii.) बच्चों की तोतली वाणी में बोलने का चित्रण सुंदर ढंग से किया है।
(iii.) एकान्तता व गेयता उचित है। खड़ी बोली हिन्दी का प्रयोग है। मानवी-करण अलंकार है।

द्वारा अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्रश्न क्रमांक (11.) का उत्तर (ख.)

इस प्रकार - - - - - - - - - - - - - - - - - - हो गई हैं।

(i.) संदर्भ तथा प्रसंग-

प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'सृजन' के गद्य-खंड के ~~अन्द~~ अंदर संकलित 'भय' शीर्षक निबंध से लिया गया है। जिसके लेखक श्री रामचंद्र शुक्ल हैं।
प्रस्तुत गद्यांश में तथाकथित सभ्यता के प्रसार के बाद वर्तमान में भय की स्थिति के बारे में बताया गया है।

(ii.) व्याख्या :-

इस गद्यांश में आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी दुःख की छाया को मन से हटाने के संदर्भ में कहते हैं कि मनुष्य द्वारा भयकारक का सामना करने की आदत विकसित हो जाने पर वह धीरे-धीरे अपने द्वारा प्राप्त ज्ञान के बल पर, हृदय के साहस बल पर तथा शारीरिक बल के द्वारा अपने मन में साहस रखकर दुःख की छाया को हटाता चलता है। यही सभ्यता के प्रसार-प्रचार का क्रम रहा है।
जैसे, पहले मनुष्य जाति को भूत-प्रेतों का डर रहता था। क्योंकि उस समय शिक्षा का प्रसार नहीं था। आज का मानव पशु-पक्षियों व हिंसक व दीर्घकाय जानवरों से भी नहीं डरता हैं।
परंतु, लेखक के अनुसार, आज भय का स्वरूप कुछ बदल

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

गया है। अब वैसा भय नहीं रहा, जैसे पहले रहा करता था, परंतु भय की वासना का पूर्णतः परिहार नहीं हो पाया है।
आज का मनुष्य दूसरे मनुष्य से ही भयभीत है। मनुष्यों के ~~दुःख~~ दुःख का कारण मनुष्य ही रह गया है।
लेखक कहता है कि हालाँकि दुःखदान अर्थात् किसी को दुःख पहुँचाने के तरीकों में अवश्य परिवर्तन आ गया है। आज कोई किसी की जमीन, जायदाद आदि चोरी नहीं कर सकता, परंतु झूठे दस्तावेज बनाकर संपत्ति हड़पना आज भी जारी है। अल्पसंख्यक, बहुसंख्यकों से भयभीत हैं। गरीब अमीरों से भयभीत हैं। विकासशील देश, विकसित देशों से भयभीत हैं।

(iii.) विशेष :-
(i.) भय की वर्तमान स्थिति का सटीक व स्वाभाविक चित्रण है।
(ii.) खड़ी बोली हिन्दी का प्रयोग सहज ढंग से किया गया है।
(iii.) शैली विवरणात्मक व विवेचनात्मक है।

द्वारा अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

प्रश्न क्रमांक (12) का उत्तर (क)

लेखक जैनेंद्र कुमार के अनुसार, बाजार में एक जादू हैं। अर्थात् आकर्षण हैं जो लोगों को अपनी ओर खींचता हैं परंतु जैसे लोहे का जादू केवल चुंबकपर चलता हैं, ~~वैसे~~ अन्य धातुओं पर नहीं, उसी प्रकार इस जादू की भी अपनी एक सीमा हैं।
यदि मनुष्य का मन खाली हैं तथा जेब भरी हुई है तो जादू खूब चलेगा, ऐसा व्यक्ति बाजार से अनावश्यक, अनाप-शनाप वस्तुएँ खरीद लेगा, परंतु यदि मन खाली हो व जेब भरी न भी हो, तो भी जादू कुछ हद तक तो चल ही जायेगा। ऐसे में सबसे पहले मन पर नियंत्रण रखना अपरिहार्य हैं। इसे लेखक दो मित्रों के उदाहरण से समझाता हैं।
मन का लक्ष्य से भरे होने पर जादू नहीं चलेगा। जैसे, यदि लू में बाहर जाना हो तो पानी पीकर जाये ~~क्यो~~ ऐसे में लू का लूपन व्यर्थ चला जायेगा। उसी प्रकार व्यक्ति को अपनी आवश्यकताओं का ज्ञान होना चाहिए ताकि वह बाजार का सार्थकता प्रदान कर सके।
चौक वाले भगत जी इसी का उदाहरण हैं। उन्हें केवल अपनी जरूरत का सामान खरीदना होता हैं। बाकी बाजार उनके सामने फैला का फैला रह जाता हैं।

प्रश्न क्रमांक (13.) का उत्तर (ख)

बिहारी ने अपने काव्य में गागर में सागर भर दिया है। विभिन्न उनके काव्य में उक्ति वैचित्र्य, अन्योक्ति, अर्थ-गांभीर्य, अर्थ-विस्तार, अलंकारिता तथा कल्पना की समाहार-शक्ति का विलक्षण समावेश है। इनके दोहे 'बिहारी-सतसई' में संकलित हैं। इनका दोहा जो समाहार-शक्ति का विलक्षण उदाहरण है:-

कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात-
भरे भौन में करत हैं, नैनन ही सौं बात ।।

अन्योक्ति व उक्ति वैचित्र्य का उदाहरण-

मेरी भव-बाधा हरौ, राधा नागरि सोई।
जा तन की झाँई परै, स्याम हरित दुति होई ।।

अर्थ-विस्तार व श्लेष अलंकार का उदाहरण-

अजौं तर्‌यौना ही रह्यौ, श्रुति सेवत इक अंग,
नाक बास बेसरि लह्यौ, बसि मुकतन के संग।

अन्योक्ति व कल्पना की शक्ति का उदाहरण,

भजन कह्यौ तातै भज्यौ, भज्यौ न एकौ बार।
दूरि भजन जाते कह्यौ सौ तू भज्यौ गँवार।

बिहारी के काव्य मुक्तक छंद मे रचित हैं। इन्होंने रामायण, महाभारत, पुराण तथा उपनिषदों के विभिन्न उदाहरणों के माध्यमें से अपनी बात अभिव्यक्त की है। इसी कारण कहा जाता है:-

"सतसईया के दोहरे, ज्यों नावक के तीर।
देखन में छोटे लगे, घाव करे गंभीर ।।"

द्वारा अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्रश्न क्रमांक (14.) का उत्तर

'भ्रमरगीत' के माध्यम से सूरदास ने सगुण का मंडन तथा निर्गुण भक्ति का खंडन किया है। गोपियों द्वारा योग-साधना को कड़वी-ककड़ी व व्याधि के समान बताकर उद्धव से निर्गुण ब्रह्म के पिता, माता, नारी, दासी, आदि के बारे में प्रश्न पूछने पर उद्धव ठगा-सा रह गया ऐसे में सूरदास ने गोपियों की विरह-व्यथा का चित्रण कर, प्रेमाभक्ति की भावना का परिचय दिया है।

प्रश्न क्रमांक (15.) का उत्तर

तुलसीदास जी ने सत्य, साहित्य, सत्यव्रत, धैर्य, धर्म, विवेक तथा परमात्मा में विश्वास को ही बुरे समय के साथी बताया है। क्योंकि ये ऐसे सगुण हैं जो मनुष्य का साथ कभी नहीं छोड़ते हैं। इनसे मनुष्य बुरे-से भी बुरे समय को पार कर जाता है।

प्रश्न क्रमांक (16.) का उत्तर

शासन की दृष्टि में सभी मनुष्य, मनुष्य होने के नाते समान होना चाहिए. ऐसा प्रजातंत्र ही सफल है तथा ऐसी स्थिति उत्पन्न होने से समाज में शांति व्यवस्था कायम रहेगी तथा संपूर्ण समाज का शासन के प्रति विश्वास बढ़ेगा। 'विधि का शासन' लागू होगा। 'विधान-संबंधी नैतिकता' बनी रहेगी।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्रश्न क्रमांक (17) का उत्तर

ममता को इस पर आश्चर्य हुआ। उसने अपने पिता को मना कर दिया तथा कहा कि वे ये उत्कोच स्वरूप लिया सोना लौटा दें। कोई न कोई ब्राह्मण तो ऐसा होगा ही, जो उनकी सहायता करेगा। विपत्ति के लिये इतना प्रबंध अनुचित है। ऐसा कहकर उसने उस स्वर्ण को स्वीकार नहीं किया।

प्रश्न क्रं. (18) का उत्तर

कवि कुँवर नारायण का साहित्यिक परिचय:-

आधुनिक हिन्दी साहित्य में नागर-संवेदना को अभिव्यक्ति देने वाले कुँवर-नारायण का जन्म सआदतनपुर (उत्तरप्रदेश) में सन् 1927 ई. में हुआ। प्रारंभिक शिक्षा वहीं पर हुई तथा उच्च शिक्षा इलाहाबाद विश्वविद्यालय से हुई।
नई कविता तथा तीसरा तारसप्तक से प्रकाश में आये कवियों में कुँवर-नारायण का स्थान अग्रणी है।
इन्होंने कविता के साथ-2 कहानी, निबंध, रिपोर्ताज व यात्रा वृतांत भी लिखे हैं।
बाजे पायलिया के घुँघरू, दीप जले, शंख बजे (काव्य-संग्रह), क्षण बोले कण मुस्काये (रिपोर्ताज-संग्रह) वाजश्रवा के बहाने तथा आत्मजयी (खंड काव्य) हैं।

द्वारा अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

इनकी रचनाओं में वैचारिक धुंधलापन, अखबारी सतहीपन व व्यर्थ का उलझाव नहीं है।
इनका देहावसान 15 नवंबर 2017 को हुआ।

प्रश्न क्रं. (19.) का उत्तर

'उषा' कविता में कवि शमशेर बहादुर सिंह ने निम्न उपमान लिखे हैं तथा इनकी सहायता से प्रातः कालीन वातावरण का चित्रण घरेलू बिंबों के आधार पर किया है। यथा-
(i.) बहुत नीला शंख जैसे।
(ii.) काली सिल जो अभी-२ धुली है।
(iii.) राख से लीपा चौका (जो गीला पड़ा है।)
(iv.) लाल-केसर से जैसे धो दिया हो। इस प्रकार सहज-सरल भाषा में उषा-काल का चित्रण किया है।

प्रश्न क्रं. (20.) का उत्तर

इस कथन के आधार पर बसंत की चारित्रिक विशेषतायें इस प्रकार हैं:-
(1.) सेहत पर ध्यान देने वाला व्यावहारिक व्यक्ति।
(2.) स्वच्छता की सनक से नफरत करने वाला व्यक्ति।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

खंड 'घ'

प्रश्न क्रं (21.) का उत्तर

गाँधीजी कर्मप्रिय व्यक्ति थे। वे मनुष्य को तथा विशेषतः विद्यार्थियों को स्वावलंबन की सीख देना चाहते थे।
वे व्यवस्था में दोष पर, व्यवस्थापक से नहीं अपितु व्यवस्थापक से दूर रहने को कहते थे। वे मनुष्य की आध्यात्मिक समानता में विश्वास रखते थे। अफ्रीका के जोहानिस्बर्ग थाने में श्वेत अधिकारियों द्वारा भारतीयों पर अत्याचार करने पर भी उन्होंने व्यवस्थापक का नहीं, व्यवस्था का ही विरोध किया।

प्रश्न क्रं (22.) का उत्तर

लहनासिंह को बड़ा झटका लगा जब उसे पता लगा कि उसकी लड़की की कुड़माई हो गई है। वह क्रोध से भर गया। तथा रास्ते में उसने सब्जी के ठेले से सब्जी गिरा दी। एक लड़के को खिड़की में धकेल दिया। दूध से भरे पात्रों को गिरा दिया। इस प्रकार उसने अपना क्रोध प्रकट किया।

परीक्षार्थी उत्तर

प्रश्न क्रं (23.) का उत्तर

जब महादेवी को डॉक्टरों ने बताया कि गाय को ~~सू~~ किसी ने सूई खिला दी है तो उसे कष्ट व आश्चर्य दोनों की अनुभूति हुई। कष्ट तो गाय की पीड़ा को लेकर हुआ परंतु आश्चर्य हुआ कि चारा तो वह खुद गाय को देती थी तो फिर सूई गाय के पेट में गई कैसे? इस प्रकार उसे कष्ट व आश्चर्य दोनों की अनुभूति हुई।

प्रश्न क्रमांक (24.) का उत्तर (ख.)

~~देवनारायण जी, संत जंघेश्वर व रामपंत जी को~~

तुलसीदास जी ने वैराग्य धारण किया ताकि लोलार्क कुंड में रहकर लोक-कल्याण का कार्य कर सके तथा ऐसे में रत्नावली उनके मार्ग में बाधा बिल्कुल नहीं बनी बल्कि तपस्विनी भारतीय नारी की तरह उनका साथ ही दिया था।

वह जब राजा भगत के साथ राजापुर से लोलार्क मठ में आयी तो उसने अपने-आप को तुलसीदास जी की नजरों से बचाये रखने की भरसक कोशिश की। वह उनके सामने नहीं आती थी। वह आश्रम में रहकर वहाँ के शिष्यों को पढ़ाती थी।

वह एक पतिव्रता नारी थी। ~~उसने~~ जब तुलसीदास जी ने रत्नावली को मठ से चले जाने का आदेश दिया तो उसने बिलकुल मना भी नहीं किया। वह अपने पति तुलसीदास जी से उनकी कृति "रामचरित मानस"

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

की प्रति माँगती हैं तथा समाचण उसकी प्रशंसा भी करती हैं।
अंत में तुलसी -रतना का संवाद हैं जो इस कथन को प्रष्ट करता हैं।
तुलसी ने कहा - 'गई ?'
रत्नावली - 'जा रही हूँ। पर एक भीख माँगती हूँ।
तुलसी - 'कहो, रत्ना ?'
रत्नावली - 'मेरे मरने से पहले एक बार अपना मौसदा जरूर दिखाना।'
तुलसी - 'आऊँगा।'
अतः स्पष्ट हैं कि तुलसीदास जी द्वारा लोककल्याण हेतु वैराग्य धारण करने पर रत्नावली उनके मार्ग में बाधा नहीं बनी, बल्कि तपस्विनी भारतीय नारी के समान उनका सहयोग ही किया।

परीक्षार्थी उत्तर

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या

खंड (उ.)

प्रश्न क्र. (25.) का उत्तर

टी.वी. समाचारों में विजुअल्स की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। इसमे ध्वनि, शब्द व चित्रों का अद्भुत संगम होता है। इसमें समाचारों के साथ-2 उससे संबंधित दृश्य भी चलते रहते हैं। इसमें ऑडियो तथा विजुअल्स में साम्य होना जरूरी है। अन्यथा पशकि भ्रमित हो सकते हैं। इसमें समाचारों की विश्वसनीयता बढ़ाने हेतू बाइट्स (छोटे-साक्षात्कार) भी लिये जाते हैं। बिना बाइट के समाचार एंकर विजुअल फॉरमेट के तथा बड़े समाचार पैकेज फॉरमेट जैसे- क्राइम बुलेटिन, स्पोर्ट्स बुलेटिन आदि में चलाये जाते हैं।

प्रश्न क्रमांक (26.) का उत्तर

संपादक के नाम पत्र लिखते समय ध्यान रखने योग्य बातें-

(1.) भाषा प्रभावशाली होनी चाहिए।
(2.) समस्या को सीधे-शब्दों में लिख देना चाहिए।
(3.) पूर्वाग्रह रहित रहना चाहिए।
(4.) समस्या व्यक्तिपरक न हो।
(5.) किसी न्यायालय की आलोचना से संबंधित न हों, क्योंकि ये दंडनीय अपराध है।
(6.) भाषा में नैतिकता हो, भले ही समस्या या शिकायत ही क्यों न हो।
(7.) कई बार समाचार के संपादकीय के जवाब में लिखे गये पत्र भी प्रकाशन हेतू छापे जा सकते हैं।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्रश्न क्रमांक (२७) का उत्तर

किसी साक्षात्कार को लिखने के बाद व प्रकाशन से पूर्व किये जाने वाले कार्य इस प्रकार हैं:-
(1.) उसमें यथासंभव संशोधन कर लिये जाएं।
(2.) इसमें साक्षात्कारकर्त्ता का परिचय शुरुआत में संक्षिप्त रूप से दिया जाना चाहिए।
(3) इसमें औपचारिकता के शब्दों आदि के प्रकाशन की जरूरत नहीं पड़ती है।
(4.) साक्षात्कारकर्त्ता के हाव-भाव तथा विशेष-टिप्पणी को प्रभावी ढंग से दिखाया जाना चाहिए।
(5) प्रकाशन से पूर्व यदि संभव हो तो साक्षात्कार-दाता को अवश्य दिखाना चाहिए ताकि विवाद से बचा जा सके।

प्रश्न क्रमांक (28.) का उत्तर

यदि मुझे जीवन में पत्रकार बनने का परम सौभाग्य मिले तो मैं ~~हिन्दी~~ अखबारी पत्रकारिता में "खेल पत्रकारिता" करना चाहूंगी। क्योंकि खेल की पत्रकारिता में रुचि होने के साथ-साथ इसका क्षेत्र भी व्यापक प्रतीत होता है। इससे व्यक्तित्व का विकास होता है तथा खेलों के बारे में जानने का मौका भी मिलता है। विभिन्न खेलों के नियमों की जानकारी भी होती है।

द्वारा अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

तथा नामी खिलाड़ियों के साक्षात्कार का अवसर भी मिलता है। इसके पाठक भी बहुत होते हैं। अतः वर्तमान में खेल -पत्रकारिता की ओर पाठकों की रुचि बढ़ने से मैं खेल- पत्रकारिता में अपना भविष्य सुनिश्चित करना चाहूँगी।

प्रश्न क्रं. (29.) का उत्तर

मनुष्य जाति के विकास में यायावरी प्रवृति का बड़ा महत्वपूर्ण योगदान है।
इस संदर्भ में मोहन राकेश के विचार इस प्रकार हैं:-
"यात्रा यायावर को एक तटस्थ दृष्टि देती है जो कि रोज के द्वन्द्वपूर्ण जीवन में रहकर संभव नहीं है। जीवन की रोजमर्रा की घटनाओं से हटकर मन में कोई कुंठा नहीं रहती है तथा मनुष्य अपने विचारों को नई परिस्थितियों के बीच में खुला छोड़ सकता है। नए वातावरण, नये लोगों, नई संस्कृतियों से संपर्क बढ़ता है तथा मनुष्य अपने आप को खुला छोड़ देता है। इस खुलेपन से उसके नैतिकता के मानदंड बदल जाते हैं तथा वह आरोपित नैतिकता में न जीकर खुली नैतिकता में जीने लगता है। वह पेड़ के पत्तों को भी ऐसे सहलाता है जैसे कि बच्चे के गाल सहला रहा हो। पहाड़ी पत्थर को भी ऐसा छूता है जैसे पालतू पशु हो। इस प्रकार से जीया गया थोड़ा समय भी बहुत-2 सालों से भी अधिक सार्थक प्रतीत होता है।"

समाप्त